ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-7* August- 2021
Innovation The Research Concept

संस्कृत वाङ्मय एवं नारी शिक्षा

Sanskrit Literature and Women's Education

Paper Submission: 10/08/2021, Date of Acceptance: 23/08/2021, Date of Publication: 24/08//2021

सुषमा शुक्ला
एसोसिएट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग,
राजा मोहन गर्ल्स पी०जी० कालेज, अयोध्या,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

स्त्री सृष्टि की अधिष्ठात्री है बिना स्त्री के हम सृष्टि की कल्पना भी नही कर सकते हैं। नर एवं नारी को ईश्वर ने समान बनाया है। बौद्धिक या शारीरिक दृष्टि से नारी कहीं भी पुरूष से कम नहीं है। यदि स्त्री को भी समाज में बाल्यकाल से ही पुरूष के समान समस्त सुविधाएं और अधिकार मिले तो वह भी पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर चल सकती है।

बींसवी शताब्दी में नारी भी अपने अधिकारों के लिए जागतृहो चली है। इसी जागृति का परिणाम है कि आज नारी सशक्तिकरण की गूंज सर्वत्र व्याप्त है। आज 'मिशन शक्ति' के अन्तर्गत महिलांए प्रत्येक क्षेत्र में स्वरोजगार के नये-2 आयामों को प्रस्तुत कर रही है। इस नारी सशक्तिकरण का प्रमुख आधार शिक्षा है। शिक्षा के अभाव में नारी कहीं अपने अधिकारों के प्रति सजग ही नही हो सकती है।

अथ य इच्छेद-दुहिता में जायेत (बृ0उ0 4.4.18)

वेदों के सहस्रों मत्रं में नारी की गरिमामयी छवि को अंकित किया गया है। मत्रं द्रष्टा नारी ऋषिकाओं की एक सूची वृहद्देवता के 24 वें अध्याय में (श्लोक 84, 85, 86) मे उपलब्ध है। प्राचीनकाल में भी कन्या की शिक्षा पर कोई प्रतिबन्ध नहीं था।

दर्शनशास्त्र गूढ विषयों में भी स्त्रियां पारंगत थी। शतपथ ब्राहमा तथा वृहदारष्यों पभिषद् में वाचक्नवी गायी का आख्यान अनेकत्र है। मोक्षमार्ग में रूचि दर्शाती हुई मैत्रेयी का भी वर्णन- येनाहं नामृतास्यां किमहं तेन
कुयामि - उपनिषद्कालीन नारियों का आत्मज्ञान भारत की प्रोज्जवल निधि है।

भारतीय साहित्य में सरस्वती को विद्या की अधिष्ठात्री-देवी पद पर प्रतिष्ठित करने की कल्पना यह सिद्ध करती है कि स्त्रियों को धार्मिक दृष्टि से विद्या प्राप्ति में कोई रूकावट नहीं थी सम्पूर्ण वाङ्मयं में हम पाते हैं कि वैदिक काल से लेकर महाकाव्य काल तक नारियो ंकी शिक्षा उत्तम कोटै की थी। आज की आधुनिक नारियों ही नही बल्कि पूर्व वैदिक, उत्तर दैविक एवं महाकाव्य कालीन, घोषा, गोर्गी, द्रौपदी एवं कैकेयी जैसी नारियों अपने अधिकारों के प्रति सजग होकर नारी सशक्तिकरण एक प्रथम एक सफल सोपान नही है।

Woman is the master of the universe, without a woman we cannot even imagine the world. God made man and woman equal. In intellectual or physical terms, women are nowhere less than men. If a woman also gets all the facilities and rights like a man in the society from childhood, then she too can walk shoulder to shoulder with men.

In the twentieth century, women have also become aware of their rights. The result of this awakening is that today the echo of women empowerment is prevalent everywhere. Today, under 'Mission Shakti', women are presenting new dimensions of self-employment in every field. The main basis of this women empowerment is education. In the absence of education, women cannot be aware of their rights.

Meaning Ichched-duhita in jayt (Br. 4.4.18)

The dignified image of woman has been inscribed in the thousands of mantras of the Vedas. A list of matra seers female sages is available in the

24th chapter of Brihaddevata (Verse 84, 85, 86). Even in ancient times there was no restriction on the education of girl child.

Women were well versed in the esoteric subjects of philosophy. In the Shatapatha Brahma and the Brihadarishya Parishad, the narrative of Vachaknavi Gai is numerous. The knowledge of Maitreyi showing interest in the path of salvation- Yenaham Namrtasyan Kimhan Ten

Kuyami - Enlightenment of Upanishad women is the shining fund of India.

In Indian literature, the idea of consecrating Saraswati as the presiding deity of learning proves that there was no hindrance in the attainment of education for women from a religious point of view. Education was of excellent quality. Not only the modern women of today, but women like Ghosha, Gorgi, Draupadi and Kaikeyi, women like Ghosha, Gorgi, Draupadi and Kaikeyi are not a successful first step of women empowerment by being aware of their rights.

मुख्य शब्दः स्त्री, शिक्षा, गार्गी, मैत्रेयी, वेद, उपनिषद्

Keywords: Woman, Education, Cargi, Maitrayi, Ved, Upnishad.

प्रस्तावना

विश्वभर के मानवों को जन्म देने वाली माँ जब पुरूष की अपेक्षा अधिक योग्य होगी तभी एक श्रेष्ठ समाज या संसार का निर्माण संभव हो सकेगा। इस विचार-विशेष को विश्व के समक्ष उपस्थित करने वाले प्रथम महापुरूष का नाम- महार्षि दयानन्द सरस्वती था। विश्व के नियामक ईश्वर ने पुरूष और महिलाओं को समान बनाया है। पुरूष के समान नारियों को भी पूर्ण अंग प्रत्यंक दिये। बौद्धिक या शारीरिक दृष्टि से नारी कहीं भी पुरूष से कम नहीं है। यदि स्त्री को भी बाल्यकाल से पुरूषों के समान पूर्ण साधन एवं समय मिले तो वह भी संसार के प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों की बराबरी कर सकती है। नारी भी नर के समान राजा, दंडाधिकारी, अध्यापक, अभियंता तथा पुरोहित पादरी या मौलवी का कार्य कर सकती हे। बीसवीं शताब्दी में नारी अपने अधिकारों को पाने के लिए जागृत हुई है। इसी जागृति का ही परिणाम है कि आज नारी सशक्तिकरण की गूंज सर्वत्र व्याप्त है। नारी सशक्तिकरण का प्रमुख आधार शिक्षा ही है। शिक्षा के अभाव में नारी अपने अधिकारों के प्रति सजग ही नहीं हो सकती है। यदि नारी हीनभावना से ग्रस्त रहेगी तो वह अपनी सन्तान, अपने परिवार एवं अपने अधिकारों के प्रति संचेत कैसे रहेगी। नारी शिक्षा पर यदि हम दृष्टिपात करें तो सर्वप्रथम वैदिक युग में अयोग्य पुत्र की अपेक्षा योग्य कन्या का जन्म माता-पिता अधिक श्रेयस्कर मानते थे।

अथ य इच्छेद दुहिता में पण्डिता जायेत' (वृ0उ0 4.4.18) वेदों के सहस्रो मंत्रो में नारी की गरिमामयी छवि को अंकित किया गया है। उषा, आपः अदिति, सरस्वती आदि देवताओं को संबोधित करने वाले जो वैदिक मंत्र मिलते हैं उनमें नारी माहात्म्य का ही उल्लेख हुआ है। ऋग्वेद में स्त्री को यज्ञ में ब्रहमा का स्थान ग्रहण करने के योग्य बताया गया है। ऋग्वेद में ही सरस्वती रूपा विदुषी नारी का आह्वान करने वाला निम्न मंत्र दृष्टव्य हैः-

सरस्वती देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने (10/17/7)

तथा मम पुत्राः शत्रुहणोऽथो में दुहिता विराट्। (10/156/3)

पुरूष ऋृषियों की भॉति स्त्री ऋषिकाओं ने भी वेदों के विभिन्न मंत्रों तथा सूक्तों का रहस्य जाना था। वे इन मंत्रों का अर्थचिन्तन कर ऋषिका पद को प्राप्त कर सकी थी। घोषा कक्षीवती (10/36/90) उर्वशी (10/35/16/18) यमी (10/134) शची पौलोमी (10/156) विश्वारा आत्रेयी (5/28) अपाला आत्रेयी (8161)

मंत्र द्रष्टा नारी ऋृषिकाओं की एक सूची वृहद्देवता के 24 वें अध्याय (श्लोक 84, 85, 86) में उपलब्ध है। आधुनिकयुग की भॉति प्राचीनकाल में भी कन्या की शिक्षा पर कोई प्रतिबन्ध नही था। वैदिककाल से लेकर ईसवीं शती के आरम्भ तक कन्या का वेदाध्ययन उपनयन संस्कार से आरम्भ होता था। पूर्व वैदिक काल में लोपामुद्रा, विश्ववारा, सिकता तथा घोषा आदि अनेक नारियों ने वैदिक-मंत्रों की रचना की थी और वे वेद में ऋषि की उपाधि से विभूषित हुई थी। विवाह योग्य बनने के लिये अध्ययन की भी अनिवार्यता थी। ब्रह्ा्रचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्। (अथर्व 11.5.18) भारतीय विद्वान अल्तेकर ने भी कहा है कि उस समय नारी समाज भी, वेदाध्ययन हेतु ब्रहा्रचर्य का प्रतीक मौन्जी को धारण करता था।

पुराकल्पे तुं नारीणां मौन्जी बन्धनं इष्यते।
अध्ययनं च वेदानां सावित्री वचनं तथा।
(प्राचीन भारत में शिक्षा)

दर्शनशास्त्र जैसे गूढ़ विषयों में भी स्त्रियां पारंगत थी। ब्रह्म अर्थात् वेद का प्रचार करने के कारण उपर्युक्त ऋषिकाओं को ब्राह्मवादिनी कहकर पुकारा जाता था। शतपथ ब्राह्मण तथा वृहदारण्यकोपनिषद् में वाचक्नवी गार्गी का आख्यान अनेकत्र आया है। राजा जनक की सभा में उपस्थित विद्वत समुदाय को जब महर्षि याज्ञवल्क्य ने अपने अपरिमित ब्रह्मज्ञान के द्वारा निर्वाक कर दिया तो वचक्नु ऋषि की पुत्री गार्गी उठ खड़ी हुई और उसने महर्षि से पूछा "'अथ हैनं गार्गी वाचक्नवी पप्रच्छ याज्ञवल्क्येति होवाच ..... आदि। तदन्तर गार्गी वाचक्नवी ने याज्ञवल्क्य से गूढ़ दार्शनिक प्रश्न पूछे (वृहदारण्यकोपनिषद 3/6/1 पर्याप्त प्रश्नोत्तर करने के पश्चात् महर्षि ने परमात्मा की महिमा को प्रभावशाली शब्दों में उद्घोषित किया। एतस्य वा अक्षरस्य ..... विधृतास्तिष्ठन्त्ये आदि"। महर्षि याज्ञवल्क्य जैसे ब्रह्मनिष्ठ में शास्त्रार्थ में प्रवृत्त होकर गार्गी जैसी भारतीय विदुषी ने समस्त नारी जाति को गौरवान्वित किया। याज्ञवल्फ्य की

विदुषी पत्नी मैत्रेयी का आख्यान भी वृहदारण्यकोपनिषद् (2/4) में वर्णित हुआ है। मोक्ष मार्ग में अपनी रूचि को दर्शाती हुई मैत्रेयी ने अपने पति से कहा था, 'सा होवाच मैत्रेयी'। येनाहं नामृतास्यां किमहं तेन कुयाम् ि..... पत्नी की इसी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए महर्षि न आत्माविषयक अपना प्रसिद्ध उपदेश 'न वा अरे पत्युः कामाय पतिः प्रियोभवति आत्मनुस्तु कामाय पतिः प्रियोभवति" आदि। मैत्रेयी को ही संबंधित कर महर्षि याज्ञवल्क्य ने उपनिषद के अमर वाक्य का उच्चारण किया था।' "आत्मा वा अरे दृष्टव्यः श्रोतव्यों मन्तव्यों ..... मैत्रेध्यात्मनो वा।" उपनिषद् कालीन नारियों का अध्यात्मज्ञान भारत की प्रोज्जवल निधि है। उपनिषदकालीन

छात्रांए दो भागों में विभाजित की जाती थी एक ब्रह्मवादिनी और दूसरी सद्योदवाहा। ब्रह्मवादिनी छात्राएं आजीवन नीतिशास्त्र, धर्म और दर्शनशास्त्र की छात्रांए रहती थी जबकि सद्योद्वाहा कन्यांए विवाह के पूर्व तक 15-16 वर्ष तक छात्राएं रहती थी। 9-10 वर्षों तक वे शिक्षा प्राप्त करती थी और वैदिक ऋचांए कण्ठस्थ करती थी। प्रार्थना के साथ-साथ धार्मिक प्रथाओं या संस्कारों को सम्पन्न करती थी और इन संस्कारों को वह विवाह के पश्चात् भी जारी रखती थी। उदाहरण स्वरूप रामायण में सीता को प्रतिदिन वैदिक प्रार्थना करते बतलाया गया है। इसके अतिरिक्त ब्रह्मवादिनी महिलायें शिक्षा के ऊँचे प्रतिमान स्थापित करती थीं। एक धर्मशास्त्री महिला 'कृषतिस्ना ने मीमांसा के ऊपर एक वृहद रचना की थी। इस आधार पर ए0एस0 अल्तेकर ने यह निष्कर्ष निकाला कि जिस अनुपात में उच्चशिक्षित महिला की जानकारी मिलती है उससे यह स्पष्ट होता है कि साधारण शिक्षा प्राप्त महिलाओं का अनुपात अधिक होगा। (ए.एस. अल्तेकर 'द पोजीशन आॅफ विमन इन हिन्दूसिविलाइजेशन' पृ0 10-11-12) जब वैदिक कर्मकाण्ड के प्रति आलोचनाएँ बढ़ने लगी और धार्मिक स्तर पर बलि-प्रथा के विरूद्ध 600 ई0 पू0 में धार्मिक आन्दोलन तेज होने लगा तब उसमें स्त्री विद्वत ने भाग लिया और बलि प्रथा के विरूद्ध न सिर्फ अपना आन्दोन छेड़ा बल्कि उन महिलाओं को भी आगे आने के लिए प्रोत्साहित किया जो फैशन रूप-सज्जा और गहनों में विशेष रूचि रखती थी। उन लोगों को अध्यात्म का मार्ग दिखाया। महिला दार्शनिकों के आजीवन अविवाहित रहने का संकल्प भी आध्यात्मिक दर्शन को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करता था। ए0एस0 अल्तेकर The position of women Page-12 उपनिषद्काल में स्त्रियां भी अध्यापन करने लगी तभी उन्हें 'आचार्या' 'उपाध्याया' की उपाधि प्रदान की गयी। ('उपेत्याधीयतेअस्या उपाध्यायी उपाध्याया। आश्व0 गृ0 द्वि0 भा0 पृ0 216, 310, 402') अर्थशास्त्र रचयिता चाणक्य एवं कामसूत्र रचयिता वात्स्यायन ने भी कन्यायों, गणिकाओं आदि को नृत्य आदि की शिक्षा दिये जाने का उल्लेख किया है। (गीत वाद्य पाठ्यनृत्तं ..... कलाज्ञानानि गणिका दासी .....(अर्थ शा0- 2.27.41) (प्राग्योवनात्स्त्री का0सू0 1.32)

राजकुल की दासियां भी चैंसठ विद्याओं में विशारद तथा, नृत्य वाद्य एवं संगीत में कुशल होती थी। (चतुःषाष्टिविशारदाः महा0 भा0 2.61.9)

नरियों को दी जाने वाली शिक्षा का क्या विषय रहा होगा। इस विषय में योग्यता एवं कुल-स्तर के भेद से कन्याओं को धार्मिक, आध्यात्मिक, राजनैतिक व्यावसायिक सभी प्रकार की शिक्षा देने का परिचय प्राप्त होता है।

कन्या को सर्वप्रथम गृह-विज्ञान की शिक्षा एवं व्यावसायिक ज्ञान की शिक्षा अवश्य दी जाती थी। वात्स्यायन ने कन्याओं को 64 कलाओं में प्रवीणता प्राप्त करने का निर्देश दिया है। (का0सू0 1.3.13) स्त्रियां ललितकला की शिक्षा में आगे थी। इन कलाओं में नृत्य, संगीत, वाद्य, काव्य, चित्रकला की शिक्षा विशेषरूपेण श्रेष्ट स्थान रखती थी। इससे ज्ञात होता है कि उस समय नृत्य आदि ललित कलाओं का विशेष स्थान था और आध्यात्मिक शिक्षा किसी भी वर्ग की नारी ग्रहण करती थी।

ऋग्वेद के एक मंत्र में "सम्राज्ञी श्वसुरे भव सम्राज्ञी श्वश्रुवां भव।" (ऋ0 10.85.46) सामाजिक जीवन में प्रवेश करते समय कन्या को वधु के रूप में साम्राज्ञीभव का आर्शीवाद दिया जाना, यह प्रमाणित करता है कि प्रशासन की सबसे छोटी इकाई गृह की स्वामिनी होती थी। राजाओं की पत्नियां दूसरों को न्याय एवं राजनीति की शिक्षा देती थी और चक्रवती राजा की तरह ही स्त्री समाज की समस्याओं पर अपना निर्णय प्रदान करती थी। (यजु0 सं0 10,26,27) ऋक् संहिता 4,22.7, में बनी भी नारी द्वारा किये गये न्याय से राज-प्रबन्ध की स्थिरता का वर्णन किया गया है। महाकाव्यों में भी नारियों के राजनीतिक ज्ञान का विशद वर्णन है। किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में द्रौपदी के मुख से राजनैतिकज्ञान से परिपूर्ण वाक्यों का वर्णन है। व्रजन्ति ते मूढाधियः - (किरात0 1.30.45) द्रोपदी द्वारा युधिष्ठिर को समझाना, उसकी व्यावहारिक बुद्धि को दर्शाता है। उसकी गूढ राजनीति एवं बुद्धिमत्ता से भीम भी सहमत है। द्रौपदी की बाते तो वृहस्पति के लिए भी विस्मय का कारण है। (किरात, 2-2) अतएव नारी का पुरूष को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग उसकी राजनैतिक शिक्षा ग्रहण किये जाने का प्रतीक है। वैदिक परम्परा का अनुकरण करता हुआ नारी-समाज, आज के राजनैतिक क्षेत्र में अग्रणी है। मध्यकालीन भारत में 'रजिया सुल्तान' शासक के रूप में उल्लेखनीय रही है। जहाँगीर की पत्नी नूरजहाँ भी राजनीति का ज्ञान रखती थी। रघुवंश में भी पति की मृत्यु के पश्चात् पटरानी

को सिंहासनरूढ़ किये जाने एवं मंत्रियों के सहयोग से राज्य कार्य को विधिवत् किये जाने का वर्णन है- (रघु0 19. 55. 57)

वैदिक सा0 में नारी नहीं ब्रहमवादिनी, कहीं सद्योद्वाहा के रूप में गृहस्थी में अपने पति को पूर्ण सहयोग देती थी तथा आवश्यकता पड़ने पर रथ संचालन से लेकर युद्ध संचालन तक का कार्य भी करती थी। ऋक संहिता में महर्षि मुद्गलानी ने रथारोहण किया। (ऋक0 10, 102, 2) रथारोहण के बाद युद्ध घोषणा के साथ ही साथ सम्पूर्ण सेना मुद्गलानी के पीछे चल पड़ी। (ऋक0 10, 102, 6) इसके अतिरिक्त कैकेयी का देव-दानव युद्ध में दशरथ के साथ जाना यह बात स्पष्ट करता है कि युद्ध की विलक्षण घड़ी में अपने पति की सहायता करना ही उसका ध्येय था। इसी तरह किरातार्जुनीयम् की द्रोपदी शस्त्रविद्या से अनभिज्ञ भले ही थी किन्तु वह युद्ध की कुटिल नीतियों का ज्ञान अवश्य रखती थी। (किरात 1.30) अतएव महाकाव्य काल में भी स्त्री शिक्षा पूर्ण रूपेण दृष्टव्य होती है। यद्यपि स्त्रियों के लिए गुरूकुलों की व्यवस्था नही थी। अपितु उन्हें घर में ही किसी पुरूष द्वारा शिक्षा दी जाती थी। उत्तरा को नृत्य सीखने के लिए शिक्षिका वृहण्ला का चुनाव किया गया था तब सर्वप्रथम उसकी परीक्षा ली गयी थी। इन सब दृष्टान्तों से कन्या की शिक्षा के विशेष महत्व का प्रतिपादन होता है। महाकाव्यकाल में भी नारियां शिक्षित थी यह उनकी वाणी की प्रौढ़ता से सिद्ध होता है। (अलं विलम्य, त्वरितंतु हिवेला, कार्ये किल स्थैर्य सहे विचारः। (नैषध 0 3.91)स्त्रियों का आचरण , उनके द्वारा यज्ञानुष्ठान, वर-चयन के समय वर की योग्यता का निरीक्षण, पुरूष पात्रों द्वारावैदुष्यपूर्ण संवाद महाकाव्यकाल की नारियों को सुशिक्षित होने का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। भारतीय साहित्य में सरस्वती को विद्या की अधिष्ठात्री देवी के पद पर प्रतिष्ठित करने की कल्पना यह सिद्ध करती है कि स्त्रियों को धार्मिक दृष्टि से विद्या-प्राप्ति में कोई रूकावट नही थी। इस प्रकार सम्पूर्ण संस्कृत वाडमय पर दृष्टिपात करने पर हम पाते हैं कि वैदिक काल से लेकर महकाव्य काल तक में नारियों की शिक्षा उत्तम कोटि की थी। आज की आधुनिक नारियां ही नही बल्कि पूर्व वैदिक, उत्तर वैदिक एवं महाकाव्य कालीन घोषा, गार्गी, द्रौपदी, एवं कैकेयी जैसी नारियां अपने आधिकारों के प्रति सजग होकर नारी सशक्तिकरण का एक प्रथम एवं सफल सोपान रहीं है।

अध्ययन का उद्देश्य

नारी सशक्तिकरण का मूल नारी की शिक्षा है। शिक्षित नारियों से ही समाज में जागृति लाना सम्भव है। अतः नारियों की शिक्षा वैदिककाल में उच्चतम रूप में थी पर जानने के लिए संस्कृत वाउमय में नारी शिक्षा का अध्ययन आवश्यक है।

निष्कर्ष

सम्पूर्ण संस्कृत वाउमय पर दृष्टिपात करने पर हम पाते हैं कि वैदिककाल से लेकर महाकाव्य काल तक में नारियों की शिक्षा उत्तम कोटि की थी। पूर्व वैदिक, उत्तर वैदिक एवं महाकाव्य कालीन, घोषा, गार्गी, द्रोपदी एवं कैकेयी जैसी नारियों अपने अधिकारों के प्रति सजग होकर नारी सशक्तिकारण का एक प्रथम एवं सफल सोपान रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *महाभारत कालीन नारी। स्कालास्टिका कुजूर, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, न्यू चन्द्रावल, जवाहर नगर, दिल्ली।*
2. *स्त्री सशक्तिकरण के विविध आयाम। डॉ0 ऋषभदेव शर्मा, गीता प्रकाशन गीताभवन, रामकोट, चैरस्ता, हैदराबाद।*
3. *संस्कृत महाकाव्यों में नारी के अधिकारों एवं कत्रव्य। मंजू शर्मा ईस्टर्न बुक लिंकर्स, न्यू चन्द्रावल, जवाहर नगर, दिल्ली।*
4. *भारतीय इतिहास में नारी। डी0के0 शरणं, क्लासिकल पब्लिलिशंग कम्पनी, नई दिल्ली।*
5. *प्राचीन भारतीय साहित्य में नारी। डॉ0 गजानन्द शर्मा, रचना प्रकाशन इलाहाबाद*
6. *स्मृति ग्रंथों में वर्णित समाज। (मनुस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति, पराशर स्मृति- तलुनात्मक अध्ययन) डॉ0 मीना शुक्ला, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, न्यू चन्द्रावल, जवाहर नगर, दिल्ली।*
7. *वेदकालीन समाज और संस्कृति। डॉ0 विमला देवी राय, कला प्रकाशन, बी0एच0यू0 वाराणसी।*
8. *एकादशोपनिषद (प्रथम एवं द्वितीय भाग) सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, विजयकृष्ण लखनपाल एण्ड कं0 देहारादून।*
9. *Position of women in Hindu civilization डॉ0 ए0एस0 अल्तेकर, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, 1938।*
10. *वैदिक साहित्य और संस्कृत। आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा मंदिर वाराणसी ।*